Chapter-2

---- द्वितीय अध्याय -----

कृति परिचय- एक विश्लेषण

79

बाबू मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि हैं. गुप्तजी ने युगानुकूल भावों एवं विचारों को लेकर काव्य सृजन किया है. उनका साहित्य विशद एवं विभिन्नता लिए हुए हैं. उन्होंने गद्यमय पद्य से लेकर सुन्दरतम महाकाव्य की रचना की है. गुप्तजी की " भारत-भारती " राष्ट्रीय रचना है. महाभारत सम्बन्धी - " जयभारत ", " जयद्रथ वध ", " द्वापर ", सैरन्ध्री ", " वक संहार ", " वन वैभव ", " नहुष ", " युद्ध ", " हिडिम्बा " आदि रचनाएँ हैं. " पंचवटी ", " साकेत ", " प्रदक्षिणा " रामायण से संबंधित कृतियाँ हैं. " यशोधरा " बौद्धकालीन रचना है. इतिहास से प्रेरित कृतियाँ- " सिद्धराज ", " रंग में भंग ", " विकट भट ", " गुरुकुल ", " अर्जन और विसर्जन " आदि हैं. कवि ने अतीत के द्वारा वर्तमान की समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा की है. उन्होंने पौराणिक घटनाओं का आधार लेकर नये ढ्ग से उनकी व्याख्या प्रस्तुत की है. गुप्तजी के काव्य में प्राचीन के प्रति पूज्य भावना प्रदर्शित हुई है और नवीन के प्रति उत्साह. उन्होंने पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथानकों के द्वारा वर्तमान की समस्याओं का निराकरण करने का प्रयत्न किया है. उन्होंने अपने काव्य में प्राचीन वैभव की दुन्दुभी बजाकर वर्तमान को संदेश देने की कोशिश की है.

गुप्तजी ने अधिकांश रचनाएँ द्विवेदीयुग (1900-20) के बाद लिखी हैं. लेकिन इन रचनाओं में किसी नई विचारधारा अथवा नवीन प्रवृत्तियों का वर्णन नहीं हुआ है। इन कृतियों की प्रवृत्तियाँ द्विवेदीयुग से संबंधित हैं. अर्थात " साकेत " (सन 1932), " यशोधरा " (सन 1933), " द्वापर " (सन 1936) " नहुष " (सन 1940) का सम्बन्ध छायावाद से न होकर द्विवेदीयुग से है. कवि ने द्विवेदीयुगीन काव्यधारा का प्रतिनिधित्व किया है. उनकी मौलिक एवं अनूदित दोनों ही प्रकार की रचनाएँ प्राप्त होती है. किन्तु हमने अपने इस शोध-प्रबंध को केवल मौलिक रचनाओं तक ही सीमित रखा है. अतएव इस अध्याय में हम उनकी मौलिक कृतियों का ही संक्षेप में परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं.

(1) रंग में भंग - (सन् 1909)

" रंग में भंग " कवि की सर्वप्रथम ऐतिहासिक मौलिक रचना है. यों तो गुप्तजी " सरस्वती " आदि पत्रिकाओं में इस कृति के प्रकाशन के पूर्व से ही काव्य रचना कर रहे थे. पर " रंग में भंग " प्रबन्धरूप में लिखी गई उनकी सर्वप्रथम रचना है. जब खड़ीबोली का कोई स्थिर रुप नहीं था उस समय इस काव्य की रचना हुई. इस रचना के द्वारा यह प्रदर्शित हुआ कि खड़ीबोली गद्य के ही नहीं पद्य के लिए भी उपयुक्त भाषा है. अर्थात् खड़ीबोली काव्य रचना के लिए सक्षम भाषा है. उसमें सरल एवं कलापूर्ण रचना हो सकती है.

इस खण्डकाव्य में दो पृथक् घटनाओं का चित्रण किया गया है. प्रथम घटना चितौड़ से संबंधित है. तथा दूसरी घटना बूंदी के नकली किले न से संबंधित है.

बूँदी नरेश हामाजी की मृत्यु के बाद सन् 1936 में वरसिंह बूँदी के राजा बने और उनके अनुज लालसिंह मैंनोली के राजा हुए. लालसिंह ने अपनी लड़की का विवाह चितौड़ के राणा खेतल के साथ किया. विदा के समय लालसिंह ने राणा खेतल के राजकवि की चाटुकारिता की निंदा की क्योंकि लालसिंह को मिथ्या प्रशंसा पसंद नहीं थी. जिसका परिणाम यह हुआ कि दोनों पक्षों के बीच संग्राम छिड़ गया. युद्ध में राणा खेतल ने वीर गति पाई और उनकी पत्नी भी सती हो गई.

दूसरी घटना बूँदी के नकली किले से संबंधित है. राणा लाखा ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक उसको बूँदी दुर्ग पर विजय नहीं मिलेगी तब तक वह अन्नोदक ग्रहण नहीं करेंगे. तब मंत्री ने राणा के प्रण की रक्षा के लिए नकली किला बनवाया . और राणा को उसी नकली किले को तोड़ने के लिए आग्रह किया. बूँदी के हाडा कुम्भ ने इस किले की रक्षा करते हुए वीरगति पाई.

इस काव्य में कवि ने राजपूतों की आन एवं मर्यादा का उल्लेख किया है. इसका केन्द्र भाव " प्रतिशोध " शब्द है. इस काव्य के द्वारा गुप्तजी ने यह प्रदर्शित किया कि प्रतिशोध की भावना ने भारत के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन को कितना दूषित कर दिया है. इसमें नारी की महानता, मातृभूमि के प्रति प्रेम तथा नैतिक भावों का चित्रण किया गया है.

(2) जयद्रथ- वध (सन 1910)

इस खण्डकाव्य का प्रणयन महाभारत की एक प्रसिद्ध घटना " जयद्रथ-वध " को लेकर हुआ है. इसकाव्य की कथावस्तु सात सर्गों में विभाजित है. अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदने के लिये जाता है. इस कार्य में उसे सफलता मिलती है. वह बड़ी वीरता से शत्रुओं से लड़ता है. लेकिन अंत में निःशस्त्र हो जाने पर जयद्रथ के हाथों वीरगति पाता है. बादमें पांडव अभिमन्यु की मृत्यु से व्यथित दिखाई पड़ते हैं और उत्तरा भी विलाप करती हुई दिखाई देती है. अर्जुन अपने पुत्र का प्रतिशोध लेने के लिए प्रतिज्ञा करता है और कृष्ण पांडवों को सांत्वना देते हुए दिखाई देते हैं. अर्जुन शंकर से पाशुपतास्त्र को प्राप्त करता है और पुनः कौरव- पांडवों के बीच युद्ध होता है. इस युद्ध में अर्जुन और भीम की वीरता प्रदर्शित हुई है. अंत में, अर्जुन द्वारा जयद्रथ-वध किया जाता है.

इस काव्य की कथावस्तु पर नवीन बुद्धिवाद का प्रभाव नहीं पडा है. इसका कारण यह है कि युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को परब्रह्म मानते हैं और उनकी वंदना करते हैं. भगवान श्रीकृष्ण की अलौकिक लीला का वर्णन किया गया है. यह गुप्तजी की प्रारम्भिक कृति है. जिससे इस काव्य में नवीन जीवन मूल्यों को स्थान नहीं मिला है. फिरभी कवि ने युद्ध, न्याय, कर्तव्य, नारी- विलाप आदि के द्वारा जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा करने का प्रयत्न किया है. इस काव्य में गुप्तजी ने कर्तव्य को महत्व दिया है. डा० उमाकान्त ने " जयद्रथ-वध " में वर्णित उत्तरा-विलाप को इस काव्य का मेरुदण्ड माना है.

82

§3§ पद्य प्रबंध :- §सन 1912§

" पद्य- प्रबंध लघु आख्यानात्मक काव्यों का संग्रह है. इसमें रामायणीय, भागवत- विषयक और सामयिक चेतना से संबंधित रचनाएँ संकलित हैं. " वनवास " और "मुनि का मोह " रामायणीय आख्यान हैं. " वनवास " में चित्रकूट के प्रसंग का वर्णन मिलता है. जबकि नारद मोह के प्रसंग का वर्णन " मुनि का मोह " नामक रचना में किया गया है. " गोवर्द्धन-धारण " भागवत विषयक, आख्यान है जिसमें गोवर्द्धन धारण की लीला का संक्षिप्त वर्णन मिलता है. " न्यायादर्श " और " बाजी प्रभु देशपांडे " ऐतिहासिक आख्यानक हैं. " न्यायादर्श " में बुंदेलखंड के न्यायी राजा का वर्णन किया गया है. उसका पुत्र एक पथिक को मरवा डालता है. तब वह राजा भी न्यायादर्श के लिए अपने पुत्र को मरने के लिए बाध्य करता है. " बाजीप्रभु देशपांडे " में देशपांडे की स्वामिभक्ति का वर्णन मिलता है. " शिक्षा " जैसी सामयिक आख्यानक कविता में शिक्षा को महत्व दिया गया है. " मक्खी चूस " में व्यावहारिक जीवन का रूप मिलता है. " निन्नानवे का फेर " में कवि ने व्यावहारिक जीवन की संचयशीलता का चित्रण किया है. " पंजरबद्ध कीर " जैसे प्रतीक काव्य में कवि का स्वातंत्र्य प्रेम अभिव्यक्त हुआ है. संक्षेप में, " पद्य-प्रबंध " विभिन्न विषयों की कविताओं का संग्रह है. " पद्य-प्रबंध " की रचनाएँ आरम्भिक काल की होने के कारण उच्चकोटि की नहीं है. फिरभी ये रचनाएँ कवि की विकासशील प्रतिभा की ओर संकेत अवश्य करती हैं.

§4§ भारत भारती §सन 1912§

" भारत-भारती " गुप्तजी की सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय रचना मानी जाती है. इस रचना में कवि ने भारत की उन्नति और अवनति का करुण चित्र अंकित किया है.

यह उद्बोधनात्मक काव्य तीन खण्डों में लिखा गया है. इस रचना के प्राचीन खण्ड में भारत की श्रेष्ठता का तथा पूर्व पुरुषों की महत्ता का वर्णन

किया गया है. " वर्तमान खण्ड " में भारत की अवनति पर क्षोभ प्रदर्शित किया गया है. " भविष्यद् खण्ड " में शुभकामना व्यक्त की गई है. इसमें प्राचीन आदर्श को महत्व दिया गया है. वे मानते हैं कि अतीत के द्वारा ही वर्तमानकाल की समस्या हल हो सकती है. अर्थात् इस काव्य के द्वारा कवि प्राचीनकाल में आर्य कैसे थे ? वर्तमानकाल में उनकी स्थिति कैसे हो गई है इसका चित्रण करते हुए उन्होंने इसके उपाय भी बताये हैं. कवि ने " भारत-भारती " में इस राष्ट्रीय समस्या का भावनामय रूप व्यक्त किया है.

§5§ शकुन्तला §सन् 1914§

यह प्रबंध काव्य विविध शीर्षकों में लिखा गया है. " शकुन्तला " के उपक्रम"में शकुन्तला की मूलकथा तथा उसके आकर्षक चरित्र का वर्णन किया गया है. " जन्म और बाल्यकाल " में शकुन्तला के जन्म का वर्णन है. वह जन्म के बाद कण्व मुनि के आश्रम में बड़ी होती है. " दर्शन " शीर्षक में दुष्यंत और शकुन्तला मिलते हैं और परस्पर आकर्षित हो जाते हैं. " पत्र " में शकुन्तला के प्रेम- पत्र का वर्णन किया गया है. और " अवधि " में संयोग श्रृंगार की झलक मिलती है. " अभिशाप " में शकुन्तला को मुनि दुर्वासा का शाप मिलता है. जिसके फलस्वरुप राजा दुष्यंत शकुन्तला को भूल जाते हैं. मुनि कण्व " विदा " में शकुन्तला को विदा देते हैं. लेकिन दुर्वासा के शाप के कारण राजा दुष्यंत उसका त्याग करता है. जिसका वर्णन " त्याग " में मिलता है. " स्मृति " में राजा को वही मुद्रिका मिलती है. मुद्रिका मिलने से राजा की स्मृति जाग्रत होती है. " कर्तव्य " अंश में राजा दुष्यंत कालनेमि से युद्ध करता है. बादमें, कश्यप और अदिति के आश्रम में ही दुष्यंत, शकुन्तला और सर्वदमन का मिलन होता है.

गुप्तजी ने कालिदास की रचना " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " से प्रभावित होकर " शकुन्तला " की रचना की है. कालिदास के नाटक की कथावस्तु को गुप्तजी ने प्रबंध काव्य का रुप दिया है. अर्थात् " शकुन्तला " में कोई मौलिक

उद्भावना के दर्शन नहीं होते हैं. " शकुन्तला " में कई स्थलों पर तो " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " के श्लोकों का अनुवाद मात्र दिखाई देता है.

(6) पत्रावली (सन् 1916)

" पत्रावली " सात पद्यात्मक पत्रों का संग्रह है. पहला पत्र महाराज पृथ्वीराज का पत्र महाराना प्रतापसिंह के प्रति लिखा गया है. दूसरा महाराना प्रतापसिंह का पत्र पृथ्वीराज के प्रति है. तीसरा पत्र छत्रपति शिवाजी का है जो औरंगजेब के प्रति लिखा गया है. चतुर्थ, औरंगजेब का पत्र पुत्र के नाम है. पाँचवा महारानी सीसोदनी का पत्र महाराज जसवन्तसिंह के नाम है. षष्ठ पत्र महारानी अहल्याबाई ने राघोबा के नाम लिखा है. सातवाँ रुपवती का पत्र महाराना राजसिंह के प्रति लिखा गया है. ये सभी पत्र ऐतिहासिक आधार पर लिखे गये हैं.

गुप्तजी ने " पत्रावली " में राजपूतों, राजपूत रानियों तथा अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों की तत्कालीन मनोवृत्तियों का चित्रण किया है. इसके साथ-2 गुप्तजी ने अपने पात्रों के व्यक्तित्व की एवं ऐतिहासिक महत्व की रक्षा की है. इन पत्रों में वैयक्तिकता एवं आत्मीयता का अभाव है. " पत्रावली " के पत्रों का हिन्दी काव्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है.

(7) वैतालिक (सन् 1916)

इस उद्बोधनात्मक काव्य में कवि ने भारतीयों को अपनी संस्कृति के साथ पाश्चात्य संस्कृति का सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है.

(8) किसान (सन् 1916)

इस खण्डकाव्य में भारतीय किसान के उत्पीड़ित जीवन का चित्रण किया गया है. गुप्तजी ने कल्लू नामक काल्पनिक पात्र को लेकर भारतीय कृषक का

चित्रण किया है. कल्लू पुलिस, महाजन जमींदार आदि के अत्याचार सहता है. किसान के जीवन की यह सबसे बड़ी विडंबना है कि वह अन्न उत्पन्न करता है किन्तु वह अपने परिवार के लिए भी भरपेट अन्न की व्यवस्था नहीं कर पाता. जब कल्लू आरकाटियों के चंगुल में फँस जाता है तब उसको फीजी द्वीप में कुली बनाकर भेज दिया जाता है . उसी समय ओवरसियर की नृशंसता से उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है. महायुद्ध के समय वह भारत आता है और सेना में भर्ती हो जाता है, बादमें, कल्लू ने टिगरिस तट पर वीरगति पाई. इसके बाद वह विक्टोरिया क्रास प्राप्त करता है.

इस खण्डकाव्य में तीन वस्तु स्थितियों-किसानों की दुर्दशा, फीजी की कुली प्रथा और महायुद्ध में सैनिकों के हताहत होने, का वर्णन किया है. इसमें कवि ने तत्कालीन युग का चित्रण किया है.

इस खण्डकाव्य में किसानों की दारुणदशा का चित्रण है और किसानों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है. इस कृति में कवि का दृष्टिकोण समाज सुधारक का रहा है.

(9) पंचवटी (सन 1925)

कवि श्रीराम के मंगलगान से " पंचवटी " का आरंभ करता है. राम, लक्ष्मण और सीता पंचवटी की छाया में पर्ण कुटीर बनाकर रहते हैं. लक्ष्मण उस पर्णकुटी के प्रहरी है. राम वन में भी राज्य का सुख भोगते हैं. उनके राज्य में सब पशु, पक्षी और वनचारी भी स्वच्छन्द हैं. सीता वन में स्वावलंबी जीवन जीती है. वह पौधों में पानी देती हैं और उन्हें सिराती भी है. वे वन में भी सुख से जी रहे हैं. लक्ष्मणजी सोचते हैं कि उनको दुःखी जानकर ऊर्मिला व्यर्थ में रोती होगी लेकिन वे तो वन में भी सुखी हैं. इस विचार के बाद जब वे आँखें खोलते हैं तब उनके सामने शूर्पणखा खड़ी थी. शूर्पणखा लक्ष्मण को वरना चाहती थी. लेकिन लक्ष्मण उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत करते हैं. तब वह राम के प्रति अपना प्रणय निवेदन करती है. राम

भी उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं. तब वह कोमल रुप त्याग कर भयंकर रुप धारण करती है. लक्ष्मण उसके नाक, कान काटकर उसे विकलांगी करते हैं और वह वहाँ से चली जाती है. कवि ने सदाचार, नैतिकता और प्रेम को महत्व दिया है. कवि भारतीय संस्कृति से प्रभावित है. उन्होंने नारी वध का विरोध किया है. फिर भी वे दुष्प्रवृत्तियों के दमन के पक्षपाती हैं. संक्षेप में गुप्तजी ने " पंचवटी " में एक पत्नीव्रत और पतिव्रत धर्म की प्रतिष्ठा की है. इस चिरपरिचित प्रसंग में भी नवीन उद्भावनाएँ की गई हैं. जिससे शूर्पणखा प्रसंग अधिक विश्वसनीय, अधिक मानवीय एवं अत्यधिक रोचक तथा आकर्षक बन गया है.

{10} स्वदेश- संगीत {सन् 1925}

" स्वदेश- संगीत " पैंसठ कविताओं का संग्रह हैं. इसकी रचनाएँ समय- समय पर होनेवाले आन्दोलनों से प्रभावित होकर लिखी गई हैं. कविताएँ दो भागों में विभक्त की गई हैं. पहले भाग में गांधीजी के राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के पूर्व की रचनाएँ हैं और दूसरे भाग में उनके नेतृत्व काल की रचनाएँ हैं. इसमें गुप्तजी ने राष्ट्रीय जागरण, मातृ-भूमि प्रेम, सामाजिक ह्लास के प्रति क्षोभ, उत्थान के लिए प्रार्थना, पर्वों और त्यौहारों का माहात्म्य दर्शन, अतीतकालीन उत्कर्ष के प्रति पूजाभाव तथा हिन्दी भाषा के द्वारा राष्ट्रोन्नयन की धारणा के साथ साथ स्वातंत्र्य संग्राम का उत्साह, राष्ट्रीयता का उल्लास, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश, असहयोग आन्दोलन का प्रशस्तिगान, प्रवासी भारतीयों के प्रति संवेदना, पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के पारस्परिक संघात से उत्पन्न नवयुग का स्वागत, साम्प्रदायिक ऐक्य का आग्रह, हरिजनोद्धार की कामना, ध्वज-वंदना तथा स्वातंत्र्य युद्ध में नारी का आहवान आदि की अभिव्यक्ति की गई है. संक्षेप में, इस रचना में राष्ट्रीय जागृति और स्वातंत्र्य चेष्टा दोनों की अभिव्यक्ति हुई है. इन पैंसठ रचनाओं में कवि ने राष्ट्र भावना और विकासशील युग चेतना के स्पंदनों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है.

87

" स्वदेश- संगीत " के कवि ने नवीन और पुराने विचारों का समन्वय दिखाया है. इस कृति में अंग्रेजों के प्रति उतना आक्रोश नहीं है जितना " भारत भारती " में है.

हिन्दू [सन 1927]

इस उदबोधनात्मक काव्य में कवि ने अतीत गौरव का गान किया है तथा वर्तमान जीवन का परिचय देकर सुखमय भविष्य की कल्पना की है. " हिन्दू " हिन्दू जाति को संबोधित कर लिखी गई रचना है. इसमें कवि ने हिन्दू धर्म को सभी धर्मों का मूल माना है. भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ और प्राचीन भाषा को सर्वाधिक महत्व दिया है. इस में कवि ने हिन्दूत्व की अवनति के कारणों का निर्देश करते हुए सामाजिक, धार्मिक, वर्ण-व्यवस्था और नारी संबंधी अनेक सुधारों का समर्थन किया है. वे गाँवों का, कृषि का, मंदिरों का तथा साधुओं का सुधार करना चाहते हैं. इतना ही नहीं, वे रुढ़ि- रीति, खान-पान, छूत-छात, विदेश- यात्रा, विधवा विवाह, स्त्री-शिक्षा, धर्म परिवर्तन में भी सुधार करना चाहते हैं. उन्होंने पारसियों, मुसलमानों और ईसाईयों को कहा कि हिन्दुओं के साथ विरोध नहीं करना चाहिए. उन्होंने राष्ट्र को संगठित करने की सलाह दी है. कवि ने नवीन एवं प्राचीन संस्कृतियों के संयोग से नूतन संस्कृति के निर्माण की इच्छा व्यक्त की है. समाज के सभी पक्षों, अंगों और समस्याओं को प्रधानता देकर लिखी गई यह रचना है. " हिन्दू " के कवि ने अंग्रेजों के प्रति उन्मुक्त प्रहार किया है. ऐसी रचनाओं के कारण उन्हें कारावास का दंड भी भोगना पड़ा है. इस कृति पर गांधीजी के विचारों का प्रभाव पडा है. यहाँ कवि की हिन्दुओं के प्रति उदार भावना व्यक्त हुई है.

[12] शक्ति [सन 1927]

" शक्ति " मार्कण्डेय पुराण की दुर्गा सप्तशती पर आधारित रचना है. जब सुर असुरों से पराजित होकर भगवान विष्णु के पास सहायता के लिए

पहुँचते हैं तब सब देवताओं के तेज से दुर्गा का आविर्भाव होता है. और दुर्गा महिषासुर, शुंभ, निशुंभ आदि असुरों का वध करती है. इस काव्य में कवि ने सुर और असुर के माध्यम से सत असत का संघर्ष दिखाया है और यह प्रतिपादित किया है कि विजय सदैव सत की ही होती है.

गुप्तजी ने हिन्दुओं को सशक्त, पुरुषार्थी और संगठित होने के लिए संदेश दिया है. यहाँ राष्ट्रीय हित की दृष्टि से धार्मिक समन्वय को गांधी जी के विचारों के अनुसार प्रतिपादित किया गया है. दुर्गा के माध्यम से कवि की भक्तिभावना अभिव्यक्त हुई है. साथ ही इसमें संघ-शक्ति की भावना को भी महत्व दिया गया है.

§13§ सैरन्ध्री §सन 1927§

इस खण्डकाव्य का प्रणयन अज्ञातवास के समय " सैरन्ध्री " छद्मनामधारिणी द्रौपदी एवं कीचक के चिरप्रसिद्ध कथानक को लेकर हुआ है. पांडव अज्ञातवास के समय विराट राजा के यहाँ रहते हैं. द्रौपदी विराट की पत्नी सुदेष्णा की दासी बनकर रहती है. तब सुदेष्णा का भाई तथा राज्य का सेनापति कीचक सैरन्ध्री पर कामासक्त हो जाता है और वह उसे पाना चाहता है. लेकिन वह अपने सतीत्व का रक्षण करती हैं. रानी सैरन्ध्री का चित्र कीचक के पास भेजती है तब कीचक उस पर मोहांध हो जाता है. इतना ही नहीं, कीचक सभा में सैरन्ध्री पर पद-प्रहार करता है. तब सैरन्ध्री का रोष भभक उठता है. बादमें, भीम कीचक का वध करता है.

इसमें कवि ने पाप- मनोवृत्ति का दुष्परिणाम दिखाया है. साथ ही पापियों एवं दुराचारियों को सावधान भी किया है. " सैरन्ध्री " में नारी के कोमल और कठोर दोनों रुपों का परिचय मिलता है. कवि ने नैतिक जीवनादर्श को महत्व दिया है.

§14§ वन- वैभव §सन 1927§

इस खण्डकाव्य में कवि ने कौरवों एवं पाण्डवों के विषम जीवन का वर्णन किया है. " वन-वैभव " के पूर्वार्द्ध में पांडवों के वनवासी जीवन का चित्रण किया गया है. वे वनमें सात्त्विक एवं सरल जीवन व्यतीत करते हैं. " वन वैभव " के उत्तरार्द्ध में कौरवों के वन विहार का वर्णन किया गया है. दुर्योधन अपने राजकीय ठाट-बाट के साथ मृगया का बहाना बनाकर बन में आता है. और कौरव गंधर्वों के जलाशय में क्रीड़ा कल्लोल करते हैं. इस पर गंधर्वराज चित्ररथ से कौरवों का युद्ध होता है. गंधर्वराज कौरवों को विमान से बाँध देते हैं. तब कौरव अपने भृत्यको पाण्डवों के पास सहायता प्राप्त करने हेतु भेजते हैं. सारी घटना को सुनकर युधिष्ठिर अपने भाइयों को सहायता करने के लिए भेजते हैं. अर्जुन अपने मित्र चित्ररथ से युद्ध करता है और कौरवों को मुक्ति मिलती है.

इस खण्डकाव्य में कवि के युद्ध विषयक विचार व्यक्त हुए हैं. गुप्तजी गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है. वे मनुष्य को नहीं लेकिन मनुष्य की बुराइयों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं.

§15§ वक संहार §सन 1927§

" वक संहार " महाभारतीय खण्डकाव्य है. संध्या के समय कुन्ती अपने पुत्रों के साथ एकाचक्रनगर में आती है. और वे सब ब्राह्मण के अतिथि बनते हैं. ब्राह्मण भी अपने नये अतिथियों का स्वागत करता है. उस नगर में बकासुर नामक एक राक्षस रहता था. बकासुर के यहाँ भोजन लेकर बारी-2 से प्रत्येक घर से एक व्यक्ति को जाना पड़ता था. वह केवल भोजन से ही सन्तुष्ट नहीं होता था बल्कि भोजन ले जानेवाले व्यक्ति को भी खा जाता था. ब्राह्मण कुटुम्ब की वक राक्षस के यहाँ बलि रुप में उपस्थित होने की

बारी आती है. तब यह प्रश्न उठता है कि बलि के लिए कौन जाये ? ब्राह्मण के परिवार में शोक का वातावरण छा जाता है. ब्राह्मणी अपने पति, पुत्र, पुत्री के लिए स्वयं मरना पसंद करती है. ब्राह्मण भी अपने प्राण त्यागने के लिए तैयार है. पुत्री भी अपने पिता, माता, भाई की रक्षा के लिए बलि रुप में जाना पसंद करती है. ब्राह्मण का लड़का भी मरने के लिए तैयार होता है. तब कुन्ती ब्राह्मण को धैर्य देती है और अंत में, कुन्ती के निर्देशानुसार भीम जाते हैं. भीम शक्ति से वक का वध कर देते हैं. परिणाम स्वरुप उस नगर की प्रजा आनंद का अनुभव करती है.

इस काव्य में माता के हृदय की विह्वलता, माता की उदारता, उसकी कर्तव्यशीलता आदि के बारे में कवि के विचार व्यक्त हुए हैं. यहाँ भीम के शौर्य के साथ माता कुन्ती का त्याग और उनका करुणामय रुप मुखरित हुआ है. कवि के मतानुसार परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को जीवनोत्सर्ग के लिए तैयार रहना चाहिए. परिवार के साथ अतिथि भी इस कार्य से विमुख नहीं हो सकते. गुप्तजी की दृष्टि से यही जीवनादर्श महान है.

[16] विकट भट [सन 1928]

इस काव्य की कथा जोधपुर के राजा विजयसिंह के एक सामंत देवीसिंह की है. राजा पोकरण के सामंत देवीसिंह से पूछते हैं कि अगर वे रुठ जाएँ तो वह क्या करेगा ? तब देवीसिंह ने कहा कि " नवकोटि मारवाड़ " को उलट दूँगा. इसका कारण देते हुए उसने कहा कि जोधपुर तो उसकी कटारी की पतली में रहता है. देवीसिंह का यह उत्तर सुनकर विजयसिंह अहंभाव में आ जाते हैं और देवीसिंह को कटु सत्य बोलने के कारण मरना पडता है. देवीसिंह का पुत्र सबलसिंह भी इस बात के लिए ही वीरगति पाता है. देवीसिंह का पौत्र और सबलसिंह का पुत्र सवाईसिंह अपने पूर्वजों के वचन पर दृढ़ रहता है. वह निर्भय है उसको मृत्यु का भय नहीं है. बादमें, राजा देवीसिंह की हत्या के लिए प्रायश्चित करता है और सवाईसिंह को पोकरण

का सामंत बनाता है. उसको अपनी माता से राजपूतों की आनबान की तथा वीरदर्प की शिक्षा मिली थी.

§17§ गुरुकुल §सन् 1928§

यह ऐतिहासिक आख्यानक काव्य है. इसमें सिक्ख गुरुओं की जीवनी एवं उनके कृत्यों का वर्णन किया गया है. इस काव्य का निर्माण एक सिक्ख सज्जन की प्रार्थना एवं अनुरोध पर हुआ है. " गुरुकुल " में सिक्ख गुरुओं के आदर्शपूर्ण जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है. गुरुनानक, अंगद, अमरदास, रामदास, अर्जुन, हरगोविंद, हरराय, हरिकृष्ण, तेजबहादुर तथा गुरु गोविन्दसिंह के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है. मुगलों से " गुरुकुल " के गुरु संघर्ष करते रहे. इसमें सिक्खों के बलिदान की कथा द्वारा यह व्यंजना हुई है कि सैनिक शक्ति, राज्य शक्ति, या शारीरिक शक्ति की उपेक्षा, आत्मशक्ति, बलिदान और मानसिक ओज का अधिक महत्व है. गुप्तजी भी गांधीजी की भांति हिन्दू, सिक्ख और मुसलमानों में एकता स्थापित करना चाहते हैं. उन्होंने मानव-धर्म को अधिक महत्व दिया है. यह रचना समकालीन प्रभाव से प्रभावित हैं. इसमें गुप्तजी की असाम्प्रदायिक दृष्टि दिखाई देती है. इसमें कवि ने सिक्ख गुरुओं की वैष्णव भावना, देवी उपासना आदि का भी उल्लेख किया है.

§18§ झंकार §सन् 1929§

" झंकार " भक्तिपरक रहस्यवादी गीतों का संकलन हैं, जिनकी रचना समय समय पर हुई है. इन कविताओं पर छायावाद का प्रभाव है. भक्ति उनका स्वानुभूत विषय है. परन्तु गीत के लिए माधुर्य भी अपेक्षित है और यही पर गुप्तजी असफल रहे हैं. जिससे ये गीत प्रयत्नसाध्य प्रतीत होते हैं. " झंकार " के लिए कवि ने विषय, कथा, पात्र या प्रसंग का आधार नहीं लिया है. " झंकार " का विषय स्वयं कवि है. इस काव्य का प्रतिपाद्य आत्माभिव्यक्ति है और अभिप्रेत ईश्वर की आराधना.

§19§ साकेत §सन् 1932§

" साकेत " आधुनिक युग का श्रेष्ठतम महाकाव्य है. कवीन्द्र रवीन्द्र ने " काव्येर उपेक्षिता " नामक एक निबंध लिखा था. जिसमें कवि ने भारतीय साहित्य की उपेक्षिताओं की ओर संकेत किया था. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी उस निबंध से प्रभावित हुए. और उन्होंने " कवियों की ऊर्मिला विषयक उदासीनता " नामक एक लेख लिखा. इस लेख में द्विवेदीजी ने ऊर्मिला के विस्मृत होने पर खेद प्रकट किया. जिसके फलस्वरुप उनके प्रिय शिष्य मैथिलीशरण गुप्त ने " साकेत " में ऊर्मिला को प्रधानता देकर इसकी क्षतिपूर्ति की है. " साकेत " में वर्णित राम के चित्रकूट आगमन तक की कथा और रामायण की कथा में समानता है. इस काव्य के उत्तरार्द्ध को वसिष्ठ ने अपनी योग- विद्या द्वारा प्रदर्शित किया है. इस काव्य में गुप्तजी का उद्देश्य रावण वध कराना नहीं है, बल्कि लक्ष्मण- ऊर्मिला का संयोग कराना है.

" साकेत " की कथावस्तु बारह सर्गों में विभाजित हैं. " साकेत " के आरंभ में कवि ने साकेत, राजप्रासाद, सरयू, साकेत के नर-नारी, जन-समृद्धि और प्रभात का वर्णन किया है. ऊर्मिला और लक्ष्मण के संवादों द्वारा कवि ने राम के राज्याभिषेक की सूचना दी है. यहाँ संयोग श्रृंगार का वर्णन किया है जिससे नवम सर्ग में वर्णित विरह की तीव्रता बढ़ गई है. राजा दशरथ राम का राज्याभिषेक करना चाहते हैं. उस समय भरत ननिहाल में हैं. दासी मंथरा कैकयी के मन में संदेह पैदा करती है. जिससे कैकयी के मन में अविश्वास का भाव पैदा होता है. बादमें, कैकयी राजा से दो वरदान माँगती हैं. एक तो राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक. राजा दशरथ उसके वरदानों को सुनकर मूर्च्छित हो जाते हैं. राम धीर-गंभीर है जबकि लक्ष्मण उग्र है. वे कैकयी को खरी खोटी सुनाते हैं. राम के वनवास की बात जानकर कौशल्या भी मूर्च्छित हो जाती है.

राम उन्हें समझाते हैं. लक्ष्मण और सुमित्रा दोनों अन्याय का प्रतिरोध करना चाहते हैं. अंत में राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वन में जाते हैं. ऊर्मिला लक्ष्मण के वियोग में मूर्च्छित हो जाती है. राजा दशरथ पुत्र वियोग में प्राण त्याग देते हैं. अयोध्या में शोक का वातावरण छा जाता है. दशरथ की मृत्यु से ऊर्मिला सबसे अधिक व्यथित हो उठती है. बादमें, भरत और शत्रुघ्न ननिहाल से अयोध्या आते हैं. अयोध्या के वातावरण को देखकर उनके मनमें दुश्चिन्ताएँ पैदा होने लगती हैं. शत्रुघ्न राज-द्रोह करने के लिए भी तैयार हो जाता है. भरत मानता है कि राजा लोक-सेवक है. उनको काम्य राज्य पसन्द नहीं है वे तो राम राज्य की स्थापना करना चाहते हैं. भरत कैकयी को भला बुरा कहते हैं और माता कौशल्या को सांत्वना देते हैं. अपने पिता का अन्त्येष्टि संस्कार करते हैं. इसके बाद भरत, शत्रुघ्न, माताएँ और अयोध्यावासी चित्रकूट में जाते हैं. वहाँ सीता और राम गृहस्थ- सा जीवन जी रहे हैं. राम सुख- शांति की स्थापना, पीड़ितों की रक्षा, मानव में देवत्व की प्रतिष्ठा, पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण करना चाहते हैं. सभी स्वजन राम को अयोध्या लौटने के लिए कहते हैं. कैकयी भी राम को अयोध्या लौटने के लिए आग्रह करती है. लेकिन वे अपने व्रत पर दृढ़ रहते हैं. लक्ष्मण और ऊर्मिला के मिलन में कवि ने नारी को महत्व दिया है. इस चित्रकूट सभा में कवि ने नारी को ऊपर उठाया है. इसके पश्चात, कवि का लक्ष्य ऊर्मिला रही हैं. बादमें कवि ने ऊर्मिला के विरह की तीव्रता का वर्णन किया है. कवि ने कृश- देही ऊर्मिला का वर्णन किया है, कि जो राजभवन की खिड़की में खड़ी है. वह सरयू को अपना जीवन- वृतांत कहती है. वह रघुवंश तथा अपने पितृकुल की महत्ता का वर्णन भी करती है. तथा वह सरयू को अपनी बाल्यावस्था की अनेक घटनाओं को सुनाती है. इसके बाद, वह विवाह का स्मरण भी करती है. वह वियोग को एक उत्सव मानती है क्योंकि वह प्रिय- पथ की बाधा बनना नहीं चाहती है. " वह सरयू को अश्रुओं का उपहार देना चाहती है. जो उसके न रहने पर मोती बनकर प्रिय की भेंट हो अथवा सागर में मिलकर बादलों के जलकण रूप में ढलें और पृथ्वी के उपयोग

94

में आएँ " [1] तत्पश्चात्, भरत के तपस्वी व्यक्तित्व का वर्णन किया गया है. भरत आराध्य के प्रतिरूप में सामने आते हैं. शत्रुघ्न अयोध्या की समृद्धि की सूचना देते हैं. हनुमान से लक्ष्मण शक्ति की जानकारी पाने पर भरत ससैन्य लंका पर चढ़ाई करने की तैयारी करते हैं. कैकयी, उर्मिला आदि भी युद्ध भूमि में जाना चाहती हैं. कवि ने राम-रावण युद्ध और मेघनाद वध का वर्णन किया है. अंत में, राम, लक्ष्मण और सीता अयोध्या लौट आते हैं. जिससे इस महाकाव्य का सुखांत होता है. लक्ष्मण और उर्मिला, चौदह वर्ष के पश्चात् मिलते हैं. कवि ने नारी के चरणों में नर को प्रणत दिखाकर अपनी नारी भावना को महत्व दिया है.

" साकेत " में गुप्तजी की मानवतावादी जीवन दृष्टि का परिचय मिलता है. गुप्तजी ने इसमें मानवके उत्कर्ष को महत्व दिया है. इस काव्य में मानवतावादी दृष्टि का चरम विकास दिखाई देता है. " साकेत में प्रथम बार मानव का उत्कर्ष अपनी चरम सीमा पर ईश्वर के समकक्ष लाकर रखा गया है. जो मध्ययुग में किसी प्रकार सम्भव न था. " साकेत " इसी कारण हिन्दी की प्रथम मानवतादर्शवादी या आदर्श मानवतावादी रचना कही जा सकती है. " [2] डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना लिखते हैं कि " साकेत में राम मानवता की साकार मूर्ति बनकर अवतीर्ण हुए हैं. वे एक उच्चकोटि के मानव हैं. " [3]

(20) यशोधरा (सन् 1932)

" यशोधरा " में गौतम बुद्ध और उनकी पत्नी यशोधरा की जीवन

---

1. " अयि, शुक्तिमयी, सँभाल तू, --- साकेत --- पृ. 386.
2. आधुनिक साहित्य- नन्ददुलारे वाजपेयी- पृ. 97.
3. साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन- डा० द्वारकाप्रसाद सक्सेना- पृ. 162.

95

झाँकी का वर्णन किया गया है. इस चरित्र प्रधान काव्य में नारी की अनुपम वेदना, सहन-शीलता, त्यागमयी तपस्या, बलिदान- भावना आदि का चित्रण किया गया है. कवि ने नारी के स्वाभिमान तथा वात्सल्यपूर्ण असहाय जीवन का वर्णन किया है. इसमें कवि ने पति परित्यक्ता यशोधरा के हार्दिक दुःख की व्यंजना की है और वैष्णव सिद्धान्तों की स्थापना. कवि ने " यशोधरा " के लिए " साकेत " की उर्मिला से प्रेरणा ली है.

" यशोधरा " का पूर्वार्द्ध चिरविश्रुत एवं इतिहास प्रसिद्ध है. इसके उत्तरार्द्ध में कवि ने कल्पना की सृष्टि की है. " साकेत " के पश्चात कवि ने काव्य की दूसरी उपेक्षिता " यशोधरा " को वाणी दी है. कवि ने यशोधरा " के माँ और वियुक्ता पत्नी दोनों रुपों का वर्णन किया है.

यह प्रेमाख्यानक खण्डकाव्य है. इस काव्य की कथा मंगलाचरण को छोड़कर उन्नीस सर्गों, " सिद्धार्थ ", " महाभिनिष्क्रमण ", " यशोधरा ", " नन्द ", " महाप्रजावती ". " शुद्धोदन ", " पुरजन ", " छंदक ", " यशोधरा ", " राहुल- जननी ". " यशोधरा ", " राहुल जननी ", तथा " बुद्धदेव " आदि में लिखी गई हैं. " सिद्धार्थ " नामक अध्याय से इसकी कथाका आरंभ होता है. सिद्धार्थ संसार के रोग, शोक, जरा, मृत्यु आदि दुखों को देखते हैं और उनके मन में विरक्ति की भावना पैदा होती है. " महाभिनिष्क्रमण " अध्याय में वे पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर विश्वकल्याण के लिए निकल पडते हैं. यशोधरा को सिद्धार्थ के गृहत्याग का दुःख नहीं है क्योंकि उन्होंने महान सिद्धि को प्राप्त करने के लिए गृहत्याग किया है. लेकिन उसे इस बात का दुःख है कि वे चोरी- चोरी क्यों गये ? क्या वे यशोधरा को अपने पथ की बाधा मानते थे ? नन्द, महाप्रजावती, शुद्धोदन, पुरजन आदि भी व्यथित हो जाते हैं. सिद्धार्थ का वियोग उनके लिए भी असहाय हो जाता है. यशोधरा भी सिद्धार्थ का अनुकरण करती है. वह स्वयं सादा वेश धारण करती है और सिर के बाल काट डालती है. यशोधरा का अनुरागिनी, मानिनी एवं जननी के रुप में चित्रण किया

गया है. जब बुद्ध सिद्धि प्राप्त कर कपिलवस्तु में आते हैं तब वह स्वाभिमानी नारी उनसे मिलने भी नहीं जाती. बुद्ध स्वयं मानिनी गोपा को मिलने के लिए आते हैं और बुद्ध नारी की महत्ता को स्वीकार करते हैं. इसी अवसर पर यशोधरा उन्हें राहुल का दान देकर अपने को कृतार्थ करती है.

§21§ द्वापर § सन् 1936 §

" द्वापर " की कथा श्रीमद्भागवत की कथा पर आधारित है. इस की कथा सोलह खण्डों में विभाजित हैं. प्रत्येक खण्ड में कोई पात्र आता है और अपने विषय में कहता है. और उसी पात्र का नाम उस खण्ड को दिया गया है. इस काव्य के चरित्र नायक श्रीकृष्ण केन्द्रवर्ती चरित्र है. इसमें कृष्ण के क्रांतिकारी, प्रेमी और मानवीय स्वरुप को महत्ता दी गई है. गुप्तजी ने कृष्ण की सोलह कलाओं के द्वारा सभी पात्रों का भावोच्छवास व्यक्त किया है. इसमें गोपी, राधा, कुब्जा का भावोन्मेष प्रकट हुआ है. विधृता, बलराम, नारद आदि पात्रों ने सामाजिक और सांस्कृतिक विचारणा स्पष्ट की है. राधा उनकी प्रेमिका है. गोपाल कृष्ण ईश्वर के प्रतीक हैं. यशोदा का वात्सल्यमयी माता के रुप में चित्रण किया गया है. विधृता के माध्यम से कवि ने पुरुष के अत्याचार, संदेह तथा उत्पीड़न का वर्णन किया है. उसके माध्यम से कवि ने नारी की सामाजिक स्थिति का भी चित्रण किया है. श्रीमद्भागवत के एक श्लोक में वर्णित " विधृता " की कथा का गुप्तजी ने विस्तारपूर्वक आलेखन किया है. " द्वापर " में विधृता की नारी ने नरकृत अत्याचारों का विरोध किया है और उन पर क्षोभ प्रदर्शित किया है. इस खंड में कवि ने आधुनिक पुरुषों की नारी संबंधिनी पापमयी दूषित मनोवृत्ति का चित्रण किया है. बलराम ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्रांति को महत्व दिया है. ग्वाल- बाल का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है. नारद क्रांति की महत्ता कोस्पष्ट करते हैं. वे क्रांति के चाहक हैं. उन्होंने संघर्ष को महत्व दिया है. देवकी के मन में कंस के प्रति संवेदना नहीं है. कंस साम्राज्यवाद

97

का प्रतीक है. वह अहंवादी, निर्बन्ध, पराक्रमी तथा पुण्य- पाप को तत्वहीन माननेवाला व्यक्ति है. अक्रूर ने सद्भावना को प्रधानता दी है. नन्द कृष्ण के पिता हैं. वे कृष्ण के वापस आने की प्रतीक्षा करते हैं. कुब्जा का कृष्ण की रुपासक्त प्रेमिका के रुप में चित्रण हुआ है. गुप्तजी ने कुब्जा का राधा की सौत के रुप में चित्रण नहीं किया है. उसको अनन्य सेविका पद दिया गया है. गोपियाँ राधा से अभिन्न और कृष्ण प्रेम में आसक्त रहती है. उनका चित्रण राधा की सखियों के रुप में हुआ है. सुदामा कृष्ण का मित्र है. वे स्वभाव से संकोचशील व्यक्ति है. इससे स्पष्ट है कि कवि ने अनेक पात्रों के माध्यम से आंतरिक जीवन का चित्रण किया है. " द्वापर " में यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति हुई है. विधृता के माध्यम से कवि की नारी भावना तथा जीवन और जगत के प्रति उनके दृष्टिकोण का उल्लेख किया गया है.

{22} सिद्धराज { सन 1936}

यह चरित्रप्रधान ऐतिहासिक खण्डकाव्य है. इसमें बारहवीं शती के वीरों की ओजपूर्ण गाथाओं का वर्णन किया गया है. इस खण्डकाव्य के नायक सिद्धराज जयसिंह बारहवीं शताब्दी का क्षत्रिय राजा है . राजा का नाम जयसिंह है और सिद्धराज उसकी सम्बोधन उपाधि है. वह सिद्धपुर पाटन का राजा था. इसीलिए उसे " सिद्धराज " की उपाधि दी गई थी. इस काव्य में उसकी शूरवीरता और उसकी विजयों का वर्णन किया गया है.

" सिद्धराज " पाँच सर्गों में विभाजित है. इस खण्डकाव्य के प्रथम, द्वितीय और तृतीय सर्ग के मध्य तक सिद्धराज के शौर्य का वर्णन किया गया है. इसमें कवि ने मातृ प्रेम को प्राधान्य दिया है. तृतीय सर्ग के उत्तरार्द्ध में राजा की पाशविक वृत्ति का निरुपण किया गया है. लेकिन चतुर्थ तथा पंचम सर्ग में कवि ने जयसिंह की उदारवृत्ति का चित्रण किया है.

98

इस काव्य का आरंभ मीलनदे की सोमनाथ यात्रा से हुआ है. मीलनदे गुजरात के राजा कर्णदेव की विधवा है. वह अपने पुत्र सिद्धराज की सफलता के लिए सोमनाथ दर्शनार्थ जाती है. किन्तु मार्ग में से ही वापिस लौट आती है.तथा तीर्थ कर की राजाज्ञा रद्द करने के बाद ही वह दर्शन के लिए जाती है. यहाँ सिद्धराज की महत्ता का चित्रण हुआ है. बादमें, सिद्धराज और मालव राज नरवर्मा के बीच में युद्ध होता है. जिसमें नरवर्मा की मृत्यु होती है. नरवर्मा के बाद यशोवर्मा अवन्ति का राजा हुआ. उसमें सिद्धराज की विजय हुई. वह अवंतीनाथ बना. सिद्धराज की सिंधुराज की कन्या रानकदे के साथ विवाह करना चाहता था. लेकिन सोरठराज खंगार का उससे विवाह होता है. खंगार सिद्धराज का शत्रु है. सिद्धराज और खंगार के बीच युद्ध होता है जिसमें खंगार की मृत्यु होती है. उसकी मृत्यु के बाद सिद्धराज ने उसके दो निर्दोष बच्चों की भी हत्या कर दी और रानकदे के प्रति पाशविक व्यवहार किया. अपने इन दुष्ट कृत्यों से उसे आत्मिक कष्ट होता है. सिद्धराज शाकंभरियों से प्रतिशोध लेता है. उसको युद्ध में विजय मिलती है और अर्णोराज को बंदी बना लेता है. कांचनदे, अर्णोराज से प्रेम करती थी. सिद्धराज कांचनदे का ब्याह अर्णोराज के साथ करता है. इसके बाद कवि ने उसकी सफल राज्य व्यवस्था का वर्णन किया है.

कवि ने गुजरात के राजा जयसिंह के जीवन के आधार पर इस काव्य की रचना की है. जयसिंह का चरित्र उच्च है किन्तु आदर्श नहीं है. इस काव्य में कवि ने उसके पतन का उल्लेख किया है. वह कुप्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करता है और इसके बाद ही उसका चरित्र श्रेष्ठ बना है. " गुप्तजी की चरित्र सृष्टि में यह एक विशिष्ट परिवर्तन है. वे पात्रों को गिरने देते हैं और गिरते हुए पात्रों को पुनः उठाते हैं. यह छायावाद युग की यथार्थोन्मुख काव्य चेतना का परिणाम है. " 1

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- डा० कमलाकांत पाठक- पृ. 209.

कवि ने राणकदे के द्वारा नारी के चारित्रिक उत्कर्ष की व्यंजना की है. मदन वर्मा के द्वारा कवि ने राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है. संक्षेप में कहा जा सकता है कि इसमें सिद्धपुर पाटन के राजा सिद्धराज, मालव के राजा नर वर्मा तथा महोवे के शासक मदन वर्मा के जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है.

‖23‖ मंगल घट ‖ सन् 1937‖

" मंगल घट " बासठ कविताओं का संग्रह हैं. इस कविता संग्रह में विभिन्न विषयों पर लिखी गई कवितायें संकलित हैं. इन कविताओं में से निवेदन, मातृभूमि, स्वर्ग- सहोदर, मेरा देश, स्वप्नोत्थित, कर्तव्य, भाषा का संदेश, भारत वर्ष, बाजीप्रभु देशपाण्डे, न्यायादर्श, निन्नानवे का फेर, संसार तथा आर्य भाषा आदि तेरह कविताएँ " पद्यप्रबंध " और " स्वदेश-संगीत " में संगृहीत हैं. " प्रणय " शीर्षक कविता " झंकार " में, महाराज पृथ्वीराज का पत्र जो महाराणा प्रताप के प्रति लिखा गया है वह " पत्रा-वली " में और " नकली किला " रंग में भंग में संगृहीत हैं. " विकट भट " का पुस्तकाकार में प्रकाशन हुआ है. इस संग्रह में लम्बी से लम्बी कविताओं से लेकर छोटी से छोटी कविताएँ संगृहीत हैं. " मंगल घट " में विविध भावों, विचारों एवं अनुभूतियों के सम्मिश्रित स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है.

‖24‖ नहुष ‖सन् 1940‖

गुप्तजी रामायण और महाभारत का पारायण करते समय नहुष के आख्यान से प्रभावित हुए. नहुष का आख्यान वाल्मीकि रामायण में और महाभारत के तीन पर्वों में उपलब्ध है. आदिपर्व में नहुष के धर्माचरण का वर्णन मिलता है. जिससे उसको इन्द्र पद दिया जाता है.

इस खण्ड काव्य का कथा सूत्र महाभारत के उद्योगपर्व से लिया गया है. " नहुष " खण्डकाव्य में नहुष इन्द्र पद को प्राप्त करता है लेकिन मानवीय दुर्बलताओं के कारण वह स्वर्ग- भ्रष्ट होता है. इस खण्डकाव्य की कथा सात कथांसों में विभाजित हैं. इस काव्य का आरंभ शची प्रसंग से होता है. अपने पति वियोग में ~~व्यथित~~ इन्द्राणी व्यथित है. इन्द्र जब स्वर्ग-भ्रष्ट होता है तब राजा नहुष को इन्द्र पद दिया जाता है. जब नहुष सद: स्नाता इन्द्राणी को देखता है तब उस पर आसक्त हो जाता है और वह उसे पत्नी बनाना चाहता है. बादमें, शची की आज्ञानुसार ऋषि मुनि अपने कन्धों पर नहुष की शिविका लेकर जाते हैं. लेकिन राजा ने पैर पट के जो एक ऋषि को लग जाते हैं. क्रोधित मुनि नहुष को शाप देते हैं जिसे वह स्वीकार करता है. यहाँ उत्थान- पतन एक साथ वर्णित हुआ है.

नहुष काव्य की विशेषता यह है कि वह भावना को सन्देश देता है. वह यह कि मनुष्य को प्रभुत्व पाने पर मानसिक सन्तुलन नहीं खोना चाहिए और उसमें अनधिकृत कार्यों के करने की भावना नहीं आनी चाहिए अन्यथा नहुष के समान पतन आवश्यक है. मनुष्य अपने कृत्यों से ही ऊपर उठता है. और कृत्यों से ही गिर जाता है. मनुष्य जीवन में प्रगति तथा अधोगति क्रमश: होती रहती है. अर्थात मनुष्य इन्द्र पद को प्राप्त कर सकता है लेकिन काम के प्रभाव के कारण उसका अध: पतन भी हो सकता है. यहाँ कवि ने मनुष्य में छिपी हुई असत प्रवृत्ति का बड़ा सजीव चित्रण किया है.

इससे स्पष्ट है कि सत्कार्यों से मनुष्य की उन्नति होती है लेकिन कुकर्म से उसका पतन होता है. " नहुष " का यह संदेश है कि पतित होने के बाद भी प्रगति के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए. इस काव्य में नारी के सतीत्व की और पुरुष की उत्थान- चेष्टा का वर्णन किया गया है.

[25] कुणाल-गीत [सन 1942]

" कुणाल गीत " भारत वर्ष की एक लोक प्रचलित कथा के आधार पर

लिखी गई कृति है. इस प्रबंधात्मक मुक्तक काव्य में पंचानवे गीत संकलित हैं. ये गीत कुणाल की आत्माभिव्यक्ति हैं. इसके गीत मुक्तक है फिर भी उनमें एकसूत्रता विद्यमान है. इस काव्य की रचना सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल के जीवन की एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना के आधार पर हुई है. कुणाल को अपनी विमाता के असफल कामासक्तिजन्य आक्रोश के कारण निष्कासित कर दिया गया. इसके बाद उसको सीमाप्रांत में भेज दिया गया. वहाँ कुणाल राजनीतिक विद्रोह को शांत करता है. तद पश्चात माता की आज्ञा के कारण उसको अंधाकर दिया गया. तब वह अपनी पत्नी कांचनमाला के साथ भिक्षाटन के लिए निकल पड़ता है. बादमें वे दोनों पाटलिपुत्र में पहुँच जाते हैं. अशोक अपने पुत्र की गीत- लहरी सुनता है और पिता तथा पुत्र का पुनः मिलन होता है. अशोक के पुण्य से कुणाल को पुनः दृष्टि प्राप्त होती है. कुणाल अपनी विमाता के अपराध को क्षमा करता है. इसी कथा के आधार पर " " कुणाल गीत " की रचना हुई है. जिसमें कुणाल की महत्ता का चित्रण किया गया है.

‖26‖ अर्जन और विसर्जन ‖सन 1942‖

" अर्जन " में सीरिया की सातवीं शताब्दी की घटनाओं का वर्णन किया गया है. इसमें सीरिया की राजधानी दमिश्क पर अरबों के आक्रमण का वर्णन किया गया है. इस युद्ध में दमश्कि का रक्षण संभव नहीं था क्योंकि अरब प्रजा उसे जीत लेना चाहती थी. जोनस तथा इउडोसिया प्रेमी-प्रेमिका हैं. वे दमिश्क में रहते हैं. जब अरब ने दमिश्क पर आक्रमण किया तब इउडोसिया अपनी मातृभूमि के संकट के समय जोनस को युद्ध के लिए उत्साहित करती है. लेकिन जोनस उसको अपनी पत्नी बनाना चाहता है. इस युद्ध में अरब- प्रजा की विजय होती है. और जोनस की हार होती है. जोनस, इउडोसिया को प्राप्त करने के लिए मुस्लिम धर्म को अपनाता है. लेकिन इउडोसिया मुस्लिम राज्य में रहना नहीं चाहती है. धर्म निष्ठ एवं

102

देशभक्त नायिका इडडोसिया अपने प्रेमी का मुख देखना नहीं चाहती है. अंतमें, वह आत्महत्या करती है. इस प्रकार नायिका ने प्रेम की महत्ता सिद्ध की है. इस काव्य में धर्म- भावना और प्रेम- भावना का द्वन्द्व चित्रित हुआ है.

" विसर्जन " में उत्तरी अफ्रीका के आठवीं शताब्दी के इतिहास की घटना का वर्णन किया गया है. इस युद्ध में अरबों की हार होती है. मूररानी के आदेश से ट्रेंजियर से ट्रिपली तक का देश एक बन जाता है. अर्थात्, स्वतंत्रता अर्जन के लिए मूरों ने अपनी सभ्यता का भी नाश किया. यह कृति सन बियालिस के " भारत छोड़ो आन्दोलन " के संदर्भ में लिखी गई है. इसके द्वारा कवि यह कहते हैं कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए किसी भी चीज का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए.

﴾27﴿ काबा और कर्बला ﴾ सन 1942﴿

ये दोनों खण्डकाव्य एक पुस्तक में संग्रहीत हैं. ये दोनों काव्य इस्लाम धर्म से संबंधित हैं. इन खण्डकाव्यों में कवि ने हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना को पुष्ट किया है.

इस काव्य के " पूर्वरंग " में अरबी स्त्री-पुरुष का वार्तालाप है. " काबा " स्फुट रचनाओं का संग्रह है. इकतीस कविताओं में इस्लाम के धार्मिक इतिहास तथा मुहम्मद साहब के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण किया गया है. " काबा " में मुहम्मद साहब के साथ शेरशाह सूरी और अकबर के द्वारा मान्य समन्वयवादी सिद्धान्तों को भी प्रस्तुत किया गया है. " कर्बला " में इमाम हुसैन के बलिदान का वर्णन हुआ है. इमाम हुसैन के मुहम्मद के नाती है. हुसैन अपने धर्म के खातिर अपना तथा अपने परिजनों का बलिदान दे देते हैं. यजीद उनको प्यास से तड़पाकर मरने देता है. इस काव्य के लिए कवि को राष्ट्रीय समस्याओं से प्रेरणा मिली है.

§28§ विश्व-वेदना §सन् 1942§

" विश्व वेदना " में 142 गीतिबन्ध है. इसमें युद्ध की विभीषिकाओं तथा उसके कुपरिणामों का वर्णन किया गया है. कवि ने संसार व्यापी युद्ध के दाहों से व्यथित " विश्व- वेदना " को वाणी दी है. कवि युद्ध को मानव जाति के लिए अभिशाप मानता है. उनकी दृष्टि में युद्ध पशुता है. कवि को युद्ध पसंद नहीं है. वे युद्ध के विरोधी है. फिरभी कवि युद्ध के परिणामों से निराश नहीं हुए हैं. उन्होंने युद्ध के कुपरिणामों का वर्णन किया है. इस काव्य में कवि की मानवतावादी दृष्टि का परिचय मिलता है. उन्होंने मानव प्रगति के अवरोध, हत्या, रक्तपात आदि की आलोचना की है. कवि के व्यक्तित्व की विशदता और व्यापकता का वर्णन हुआ है. कवि सारे विश्व की वेदना को अपनी वेदना समझता है. वे विषम वितरण तथा अधिक करों के बोझ से अत्यधिक व्यथित हो जाते हैं. कवि पूँजीवाद, साम्राज्यवाद और यांत्रिक समुन्नति को पशुबल की प्रगति विरोधी अभिवृद्धि मानता है. उसे मानवता का विकास ही अभीष्ट है. " [1] इस हेतु उन्होंने विश्व राज्य की कल्पना संयुक्त राष्ट्रसंघ की संयोजना से प्रभावित होकर प्रस्तुत की है. संक्षेप में, विश्व- वेदना मानवतावादी रचना है जिसमें युद्ध की संसार व्यापी समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है.

§29§ अजित § सन् 1946§

इस कृति में कवि ने आधुनिक युग के सिद्धान्तों एवं वास्तविक घटनाओं का वर्णन किया है. अजित एक बड़े मौरूसी किसान का पुत्र है. वह विवाहित नवयुवक है. गाँव का जमींदार उसके पिता का " बावनाताल " नामक खेत हथियाने की इच्छा से उसको एक साल के लिए कारावास का दंड देता है. अजित कारावस का दंड भोगता है. वहाँ अनेक कैदियों से उसका परिचय होता

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक- पृ. 220

104

है. कवि ने जेल के जीवन का वर्णन किया है. अजित कारागृह में दादा श्यामसिंह से मिलता है. उन दोनों के बीच घनिष्ठता हो जाती है. अजित भारत माता का उपासक, देशभक्त और क्रान्तिकारी बन जाता है. इस काव्य में ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष और आक्रोश की भावना प्रकट हुई है. लेकिन अजित में सात्विक गुणों की प्रधानता रही है. अजित के पिता अपना बावनताल खेत जमींदार को भेंट कर देते हैं. जिससे अजित को मुक्ति मिल जाती है. कारागृह से आने पर उसको पत्नी और पिता कोई भी मिल नहीं पाये. बादमें, वह रज्जू की हत्या के लिए योजना बनाता है क्योंकि वह उसकी पत्नी को भ्रष्ट करना चाहता था. अर्थात अजित क्रांतिकारी बन कर जेल से निकलता है. किन्तु बादमें वही अजित गांधीवादी बन जाता है. वह अहिंसा को महत्व देता है और सन बियालीस में किए गए हिंसक कार्यों पर खेद प्रकट करता है. वह अपनी पत्नी को अहिंसक मार्ग से ही प्राप्त करता है और ग्रामोद्धार भी करता है. कवि ने अंत में अजित को उजियारी और पुत्र से मिलाकर सुखांत परिणति की है.

इस खण्डकाव्य में कवि ने पुलिस पर व्यंग्य किया है. थानेदार का उत्कोच लेकर चोरों के कुकृत्य को प्रोत्साहन दिया है. यह बात आधुनिक युग में सत्य प्रतीत होती है. इस काव्य का उद्देश्य अहिंसा का प्रसार एवं मानवतावाद का संदेश देना है. कवि ने अजित के द्वारा गांधीवादी जीवनादर्शों की प्रतिष्ठा की है.

﴾30﴿ प्रदक्षिणा ﴾ सन 1950﴿

" प्रदक्षिणा " में रामकथा का वर्णन हुआ है. यह काव्य सवा सौ ताटंक और वीर छंदों में लिखा गया है. इसके कई छंद " पंचवटी " एवं " साकेत " से लिए गए हैं. फिरभी इसकी नवीनता उल्लेखनीय है. इसमें कवि की हृदयगत भावनाएँ प्रकट हुई हैं. इसमें लोकहित की भावना को प्राधान्य

दिया गया है. इस काव्य में कवि की अनन्य भक्ति भावना प्रकट हुई है.

" प्रदक्षिणा " का आरंभ मंगलाचरण से हुआ है. इसके बाद कवि ने अयोध्या के राजा दशरथ के घर चार पुत्रों के जन्म का वर्णन किया है. इन चारों के जन्म से ऐसा लगता था कि मानों चारों धामों की यात्रा को अयोध्या में विश्राम मिल गया है. विश्वामित्र मुनि अपने यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए राम की सहायता चाहते हैं. राम और लक्ष्मण के रक्षण से मुनियों के यज्ञ पूर्ण होते हैं. तत्पश्चात मुनि राम और लक्ष्मण को लेकर मिथिला जाते हैं. जनकपुरी में सीता स्वयंवर में कोई भी राजा शिवधनुष उठा नहीं पाता है तब मुनि की आज्ञा से राम धनुष को उठाते हैं. वे धनुष चढाते हैं, वहाँ ही वह टूट जाता है. तब जनकजी अपनी चारों पुत्रियों का विवाह राजा दशरथ के चारों पुत्रों से करते हैं. राजा दशरथ अपनी वृद्धा -वस्था के कारण ज्येष्ठ पुत्र राम को राज्य सौंप देना चाहते हैं. उसी समय महारानी कैकयी राजा दशरथ से दो वरदान माँगती हैं. एक तो, पुत्र भरत को राज्य और दूसरा राम को चौदह साल का वनवास. राम, सीता और लक्ष्मण वन में चले जाते हैं. शूर्पणखा लक्ष्मण को वरने की इच्छा से आती है. लक्ष्मण इन्कार करते हैं. और उसके नाक, कान काटकर उसे विद्रूप बनाते हैं. रावण मायावी राक्षस को भेजता है. राम मायावी मृग के पीछे जाते हैं. सीता के आग्रह पर उनको सहायता करने के लिए लक्ष्मण भी चले न जाते हैं. उसी समय रावण सीता को हरकर ले जाता है. सीता को छुडाने के लिए राम रावण से युद्ध करते हैं. जिसमें राम को विजय मिलती है. राम, लक्ष्मण और सीता वापिस अयोध्या आते हैं और राम अयोध्या का राज्य करते हैं.

(31) <u>हिडिम्बा</u> (सन 1950)

" हिडिम्बा " महाभारत पर आधारित खण्डकाव्य है, लेकिन कथा का विकास एवं प्रतिपादन शैली मौलिक है. " हिडिम्बा " के पात्र महाभारत के प्रथित पात्र हैं. पाँचों पांडव और माता कुन्ती लाक्षागृह से निकलकर वन मार्ग

लेते हैं. भीम बीहड़ वन में मार्ग बनाते हैं और माता को अपने कंधों पर चढ़ा कर ले जाते हैं. युधिष्ठिर की आज्ञा से भीम पानी लेने के लिए जाते हैं. पानी पीकर सब भ्राता और माता सो जाते हैं और भीम प्रहरी बनकर सजग रहता है. उसी समय हिडिम्बा भीम के समक्ष आती है. हिडिम्बा भीम से अत्यधिक प्रभावित हो जाती है. इतना ही नहीं, हिडिम्बा भीम के साथ भाग चलने के लिए तैयार हो जाती है. अंतमें, राक्षस हिडिम्बा की भीम के हाथों से मृत्यु होती है. बादमें, पाँचों पाण्डव अपने मृत शत्रु का अंतिम संस्कार करते हैं. हिडिम्बा पाण्डवों को एक गुहाश्रम में तीन दिन के लिए आराम करने को कह कर चौथे दिन आने का वचन देकर उनसे विदा लेती है. हिडिम्बा को देखकर कुन्ती भी कहती है कि स्त्री का कुल उसके चारित्र्य में ही है. उसमें सिर्फ काम ही नहीं है लेकिन ममत्व की भावना भी है. वह अपने भाई के वैर का बदला वैर से नहीं लेकिन प्रेम से लेना चाहती है. भीम हिडिम्बा को अपनाता है. वह युधिष्ठिर और माता के समक्ष हिडिम्बा से शादी करता है. हिडिम्बा कहती है कि देवताओं ने भी दैत्यों से संबंध जोडा है. पुलोजमा से ही इन्द्र का अन्तःपुर पूर्ण है. और जब शर्मिष्ठा कुन्ती की पुरखिन है तब हिडिम्बा को अपनाने में कोई बाधा नहीं है. भीम ने हिडिम्बा को अपनाकर उसे आर्यत्व प्रदान किया है.

कवि ने एकनिष्ठ प्रेम तथा हृदय की पावनता को महत्व दिया है. इनके द्वारा ही स्त्री को सफलता मिलती है.

(32) अंजलि और अर्घ्य (सन 1950)

यह शोक-गीति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निधन के पश्चात लिखी गई है. इसमें गांधीजी के निधन से व्यथित गुप्तजी के उद्गार हैं. कवि ने इस शोक- गीति में राष्ट्रपिता के अपार गुणों, असंख्य उपकारों और भारतवासियों की कृतघ्नता का चित्रण किया है. इसमें कवि के करुण क्रन्दन को वाणी प्रदान

107

की गई है. अंतमें, कवि ने बापू को कविजनोचित श्रद्धांजलि दी है.

गुप्तजी ने महात्माजी के कार्यों, उनके जीवन की मुख्य घटनाओं और उनके गुणों का वर्णन किया है. उन्होंने गांधीजी का चित्रण एक आदर्श मानव तथा सत्याग्रही एवं क्रांतिकारी के रुप में ही नहीं किया है. लेकिन उनको आराध्य की समकक्षता दी है. कवि ने उनके सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि गुणों का उल्लेख किया है. उन्होंने देश, समाज और विश्व की हित- साधना के लिए कार्य किए हैं. जिनका कवि ने उल्लेख किया है. " अंजलि " में बापू की मृत्यु की घटना का वर्णन किया गया है. जबकि " अर्घ्य " में कवि ने यह अपेक्षा रखी है कि वे पुनः लौट आये जिससे विश्व की वेदना का निवारण हो सके.

इस प्रकार " अंजलि " में श्रद्धांजलि देकर " अर्घ्य " में अर्घ्य चढाया है. " अंजलि " में मार्मिकता है और " अर्घ्य " में कवि की शुभेच्छा व्यक्त हुई है. इस प्रकार गुप्तजी ने यहाँ राष्ट्रपिता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है.

§33§ <u>जयभारत</u> § सन 1952§

" जयभारत " के लिए कवि ने " महाभारत " की बृहद कथा का आधार लिया है. इस प्रबन्ध काव्य में सैंतालीस प्रकरण हैं. प्रत्येक प्रकरण का कवि ने घटना, व्यक्ति अथवा घटनास्थल के आधार पर नामकरण किया है. युधिष्ठिर को काव्य का नायक पद दिया गया है. डा० नगेन्द्र के मतानुसार " जयभारत " में हिडिम्बा, सैरन्ध्री, वन-वैभव, वक- संहार, नहुष, युद्ध, जयद्रथ-वध आदि खण्डकाव्य संगृहीत हैं. संक्षेप में, इसमें समय-2 पर लिखी गई अनेक रचनाएँ संग्रहित हैं.

" जय भारत " में आदिपर्व, वन-पर्व, विराट-पर्व और उद्योग-पर्व की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है. भीष्मपर्व और उसके परवर्ती पर्वों का बहुत कम वर्णन हुआ है। इस काव्य का तृतीयांश आदिपर्व के आधार पर लिखा गया है. " जयभारत " के अंत के काव्यांश के लिए शान्तिपर्व से लेकर मौसलपर्व तक के पाँच पर्वों की कथा का आधार लिया है. इसमें नहुष के आख्यान से लेकर पाण्डवों के स्वर्गारोहण तक की सभी घटनाओं को स्थान दिया है.

इन्द्र ने अप्सराओं के द्वारा तपस्वी त्रिसरा को तप से डिगाने का प्रयत्न किया फिरभी वह तप से डिगा नहीं और इन्द्रासन प्राप्ति के लिए दृढ़ रहा. तब इन्द्र ने उसकी हत्या कर डाली. इन्द्र को ब्रह्महत्या के कारण इन्द्रासन को छोड़कर प्रायश्चित करना पड़ता है. उस समय जब इन्द्र नहीं है तब स्वर्ग की रक्षा के लिए नहुष को इन्द्र पद दिया जाता है. इन्द्र पद की प्राप्ति के बाद राजा नहुष शची को पाना चाहता है. शची की आज्ञा से ऋषि मुनि नहुष की शिविका लेकर जाते हैं. लेकिन नहुष का पैर एक ऋषि को लगता है और ऋषि उसको शाप देते हैं. वह शाप को अंगीकार्य करने के लिए तैयार हो जाता है. और अपनी भूल का पश्चाताप करता है.

शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ययाति की सहअनुचरी बनती है. देवयानी का पुत्र " यदु " और शर्मिष्ठा का पुत्र पुरु है. बादमें, राजा पुत्र पुरु को राज्य का अधिकार सौंपते हैं. पुरुकुल में भरत राजा हुए जिससे भारतवर्ष बना. श्री हरि को अवतारित कर यदुकुल उत्कर्ष पाता है. पुरुकुल में कुरु जन्म लेते हैं जिनसे पौरव कौरव बने. काशीराम की दो पुत्रियाँ अम्बिका और अम्बालिका को विचित्रवीर्य विधिपूर्वक वरता है. अम्बा का प्रेमी अम्बा का अस्वीकार करता है. भीष्म भी उससे विवाह नहीं कर पाते हैं. तब अम्बा भीष्म से वैर लेने के लिए जल जाती है. वही अम्बा द्रुपद राजा के कुल में शिखंडी के रुप में अवतार लेकर भीष्म से अपना वैर लेती है. अम्बिका ने धृतराष्ट्र को जन्म दिया और अम्बालिका ने पुत्र पाण्डु को. धृतराष्ट्र

109

की पत्नी गांधारी थी और पाण्डु की पत्नी कुन्ती और दूसरी पत्नी थी मद्रेश्वर की भगिनी माद्री. कुन्ती के तीन पुत्र हुए युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तथा माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया. गांधारी द्वैपायन मुनि के आशीर्वाद से सौ पुत्रों की जनेता बनी और उसको एक दुःशला नामकी पुत्री भी थी. जो जयद्रथ की रानी बनती है. माद्री अपने पति के साथ सती हो गई. बाल्यावस्था से ही कौरवो और पाण्डवों के बीच वैर की भावना का बीजांकुर पैदा होता है. गुरु द्रोणाचार्य कौरवों- पाण्डवों को धनुर्विद्या सीखाते हैं. लाक्षागृह में पांडवों को कपटपूर्वक रखा गया था. उसमें एक सुरंग बनाई गई थी कि जिससे कि पाण्डव मर जायें. लेकिन वे तो भेदी मार्ग से निकलकर वन में चले जाते हैं. वहाँ हिडिम्बा भीम को देखकर आकर्षित हो जाती है. भीम राक्षस हिडिम्बा का वध करते हैं. और बादमें माता और भ्राता की आज्ञा से हिडिम्बा से विवाह करते हैं. वनवास के समय भीम ब्राह्मण पुत्र को बचाते हैं. और बक राक्षस का वध करते हैं. वन से पाँच पाण्डव और माता कुन्ती पांचाल राज्य में जाते हैं. जहाँ कृष्णाका स्वयंवर था. स्वयंवर में अर्जुन मत्स्य-भेदन करता है और कृष्णा अर्जुन को वरती है. बादमें, कृष्णा पांच पांडवों की पत्नी बनकर रहती है. इन्द्रप्रस्थ पांडवों की राजधानी है. युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ करते हैं. युधिष्ठिर के महल में दुर्योधन को जल में थल का, थल में जल का आभास होता है. वह दासदासी से भी उपहास का पात्र बनता है. जिससे उसके हृदय में विकराल ज्वाला उठती है जो बादमें पांडवों से वैर लेकर वसूल करता है. अपमानित दुर्योधन अपने अपमान का बदला लेने के लिए युधिष्ठिर को आमंत्रण देकर बुलाता है और उससे धुत खेलता है. जिसमें युधिष्ठिर धन, राजपाट सबकुछ हार जाते हैं. दुःशासन द्रौपदी का चीरहरण करता है. युधिष्ठिर हार जाते हैं जिससे उनको बारह वर्ष बनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास भोगना पडता है. दुर्योधन धुत जीतता है जिससे उसको राज्य मिलता है. अर्जुन शंकर की तपश्चर्या करते हैं और पाशुपत अस्त्र प्राप्त करते हैं. धर्मराज को देखने से वही अजगर फिर से मानवरुप प्राप्त करता है. जब पाण्डव वन में थे तब

कौरव वहाँ आते हैं. गंधर्व उनको बाँध देते हैं तब दुर्योधन पाण्डवों की सहायता मांगता है. युधिष्ठिर की आज्ञा से अर्जुन चित्ररथ से युद्ध करता है और कौरवों को छुड़ाता है. पाण्डव बारह साल का वनवास समाप्त कर तेरहवें साल नृप के घर अज्ञातवास में रहते हैं. युधिष्ठिर नृप का पंडित बनता है. भीम सूत्रकार, अर्जुन बृहन्नता बनकर नर्तक बनते हैं और इसप्रकार अज्ञातवास का वर्ष पूरा करते हैं. कृष्णा सैरन्ध्री नाम रखकर रानी सुदेष्णा की दासी बनकर रहती है. विराटराजा की पुत्री उतरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से होता है. कौरवों ने पाण्डवों को रण के बिना शान्ति से राज्य देना नहीं चाहा. तब वे युद्ध के लिए प्रस्तुत होते हैं. दुर्योधन और अर्जुन द्वारकेश्वर के पास सहायता के लिए गये. दुर्योधन ने अपने पक्ष में सेना की सहायता माँग ली और अर्जुन ने निहत्थे प्रभु को. धर्मराज चाहते हैं कि युद्ध न करना पडे तो ही अच्छा है. वे युद्ध से ही नहीं लेकिन व्यर्थ वंश विनाश से डरते हैं. पाँच पांडवों को सिर्फ पाँच गाँव से ही संतोष है लेकिन द्रौपदी अपने अपमान का बदला लेना चाहती है. कौरव युद्ध के बिना कुछ भी देने के लिए तैयार नहीं है. उनको शांति प्रिय नहीं है. वे युद्ध ही चाहते हैं. जब सन्धि नहीं हो पाई तब वंश विग्रह निश्चित हो जाता है. इस युद्ध में कौरवों के पक्ष के सभी महारथियों की तथा कौरवों की मृत्यु हो जाती है. युद्ध की समाप्ति के बाद सभी सवों का संस्कार किया जाता है. कुरुवधुएँ अपने पतियों के साथ जल -समाधि में गति पाती हैं. अंतमें, विजयी युधिष्ठिर तन से सिंहासन पर होने पर भी मन से वन में ही थे. अर्थात उनको अपने स्वजन- संबंधीओं की हत्या से अत्यन्त दुःख होता है. पाँचों पाण्डव विष से विषयों को त्यागकर दुःखों से लड़कर शूर के समान सुख के स्वप्नों से जागकर चलते हैं. पृथ्वी को जीतकर वे स्वर्ग के लिए चलते हैं. उनके साथ द्रौपदी भी जाती हैं. अंतमें, युधिष्ठिर स्वर्ग के बजाय अपने सभी आत्मीयों के साथ स्वर्गाधिक नरक सहने के लिए तैयार होते हैं. युधिष्ठिर के वहाँ जाने से उनको गोलोक मिलता है.

§34§ युद्ध § सन् 1950§

यह काव्य " जयभारत " का एक अंश है. इस काव्य में " महाभारत " के भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य आदि युद्ध से संबंधित पर्वों का आख्यान हुआ है. इसमें कवि ने " महाभारत " में वर्णित कौरव- पाण्डव के युद्ध का वर्णन किया है. उस समय के योद्धा भी नियम पालते हैं. इसमें पदातियों से पदाति, अश्व गजारोहियों से अश्व गजारुढ और रथियों से रथी ही लड़ते हैं. वे युद्ध के बाद बन्धुओं के समान ही परस्पर मिलते हैं.

इस युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण निःशस्त्र रहते हैं. भीष्म अर्जुन के बाण से घायल होते हैं. तब वे दुर्योधन को कहते हैं कि तू पाण्डवों से सन्धि कर ले लेकिन दुर्योधन सन्धि करना पसंद नहीं करता हैं. वह तो अंत तक जूझने के लिए तैयार है. अभिमन्यु चक्रव्यूह में घुसना ही जानता है निकलना नहीं. जिससे जयद्रथ अभिमन्यु को मार डालता है. अर्जुन दिन रहते ही जयद्रथ वध कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं. जब भीम ने अश्वत्थामा नामक गज को मारकर यह घोषणा की कि अश्वात्थामा मर गया है. यह सुनकर द्रोणाचार्य शस्त्र फेंककर समाधिस्थ हो जाते हैं. तब द्रुपदराजा का पुत्र धृष्टद्युम्न उनका वध करता है. अर्जुन कर्ण की और भीम दुःशासन की हत्या करते हैं. दुःशासन के रक्त से द्रौपदी अपनी वेणी बाँधती है. इस प्रकार द्रौपदी और भीम की प्रतिज्ञा पूर्ण होती हैं. कर्ण के दो पुत्रों और म्लेच्छराज की नकुल के हाथों से मृत्यु होती है. सहदेव शकुनि के प्राण लेता है. कौरव पक्ष की अष्टादश अक्षोहिणी अठारह दिन में समाप्त हो जाती है. दुर्योधन, कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामा बच जाते हैं. भीम दुर्योधन को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करता हैं. संक्षेप में, इस काव्य में युद्धारंभ से लेकर दुर्योधन के गदा-युद्ध में परास्त होने तक का वर्णन किया गया है.

§35§ भूमि-भाग §सन् 1954§

" भूमि-भाग " भूदान-विषयक इक्कीस गीतों का संग्रह है. कवि ने भूदान-यज्ञ की अहिंसक क्रांति को महत्व दिया है. बादमें उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की है कि सब के सहयोग से भूदान यज्ञ को सफलता मिल जायेगी. जिससे " व्यापक क्षेत्र में अहिंसा का सात्त्विक ओज देखने को मिलेगा . " [1] कवि मानवतावादी हैं. वे मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रसार करना चाहते हैं. कवि भूदान संबंधी क्रांति को अनिवार्य मानते हैं. कवि ने इस काव्य के माध्यम से भूमि हीनों की समस्या के निवारण की इच्छा व्यक्त की है. कवि ने भूमिहीनों की करुण स्थिति को एक खेत, चढ़ौती तथा भू-भ्रष्ट प्रगीत में स्पष्ट की है. " भूमि-यज्ञ " में उन्होंने भूमि पर सबके समानाधिकार का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है. और " अनुनय " में भूमि-दान के अभ्यर्थियों की उदारवृत्ति का परिचय मिलता है. " भूमि- वंदना " और " आह्वान " के प्रगीत वन्दनात्मक और आशंसात्मक है. " वंचित " में भूमि दान की अनिवार्यता को महत्व दिया गया है. " भूमिहीन " तथा " कवि के प्रति " व्यंग्यात्मक शैली के में लिखे गए प्रगीत है.

§36§ राजा- प्रजा §सन् 1956§

यह कृति राजा और प्रजा दो खण्डों में विभाजित हैं. " राजा " खण्ड में प्रजातंत्र प्रणाली के दोषों का उल्लेख किया गया है. और इनसे सचेत रहने के लिए आग्रह किया गया है. जबकि " प्रजा " खण्ड में प्रजातंत्र का समर्थन किया गया है.

" राजा " खण्ड में राजा के द्वारा कुकृत्यों का स्मरण और तज्जन्य क्षोभ, धर्म-नय-निष्ठा से विमुक्त पूँजीवाद के प्रति आशंका, निर्वाचन-पद्धति

---

1. भूमि-भाग दो शब्द - मैथिलीशरण गुप्त- पृ. 3.

के दोष, पद- लोलुपता, विश्व के प्रजातन्त्रों के दोष, नवीन वर्गों का उदय, पाप* वृद्धि, घूसखोरी, नैतिकता का ह्लास, प्राचीन और नवीन लोकतंत्र की तुलना आदि पर व्यंग्य किये गए हैं. " प्रजा " खण्ड में राजा के निम्न आरोपों का खण्डन किया गया है. राजा का विसर्जन, अधिकारों की रक्षा, प्रजातंत्र की त्रुटियाँ, चरित्र-दोष, प्रजा की राजनीतिक अयोग्यता और उसका परिहार, आशा का संबल और ईश्वर का विश्वास, अहिंसा, नारी का उत्कर्ष, पंचवर्षीय योजनाएँ, विकास कार्य, कृषि, गृहघोग, शिक्षा यांत्रिक उन्नति, स्वराज्य को सफल बनाने का उघोग, दारिद्य और रोग का नाश, विदेश नीति और विश्व मानवता में प्रजातंत्र की पूर्णता. इस खण्ड में कवि ने यह आग्रह भी रखा है कि राजा को प्रजा से मिल जाना चाहिए.

" राजा " अंश में राष्ट्रीय नव-निर्माण के पूर्व पक्ष का तथा " प्रजा " अंश में उसके उत्तर पक्ष का उदघाटन हुआ है.

इस काव्य में कवि के राजा एवं प्रजा संबंधी विचार व्यक्त हुए हैं. उन्होंने नीति एवं तंत्र संबंधी अपने विचार व्यक्त किए हैं. वे पारस्परिक मिलन द्वारा उत्थान की ओर आगे बढ़े. उन्होंने एकता तथा विश्वबंधुत्व की भावना को अपनाने की प्रेरणा दी है. इससे स्पष्ट है कि कवि ने राजतंत्र और प्रजातंत्र दोनों के गुण दोषों का उल्लेख किया है. फिरभी कवि ने ग्रहणीय का परित्याग उचित नहीं समझा है. वे मानते है कि स्वस्थ विकास के लिए प्रजा में आत्मशासन एवं संयम आवश्यक है. आत्मशासन एवं संयम से ही प्रजा का स्वस्थ विकास संभव है.

§38§ विष्णुप्रिया §सन 1957§

" विष्णुप्रिया " में श्रीचैतन्य महाप्रभु तथा उनकी पत्नी विष्णुप्रिया के जीवन की झांकी अंकित हुई है. इसका प्रणयन विष्णुप्रिया के उपेक्षित पात्र के पुरस्करण के लिए हुआ है. " विष्णुप्रिया " की विष्णुप्रिया , ऊर्मिला और

यशोधरा का विकसित रुप है. गौर हरि का जन्म नवद्वीप में हुआ था. उनके अग्रज ने बाल्यावस्था में ही सन्यास ले लिया था. पिता की मृत्यु के बाद माता ने ही उनका लालन- पालन किया. बादमें, उनका विवाह विष्णुप्रिया से हुआ. उसका प्रेम आरंभ से ही त्याग-निष्ठ रहा है. विवाह के बाद गौर पिता का श्राद्ध करने के लिए गया गए. गौर को इस बात का संतोष है कि अब उन्हें माता की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी. जिससे गौर की भक्ति भावना विकसित हो पाई है. श्रीनिवास, नित्यानन्द, अद्वैत आदि उनके शिष्य हैं. माता, पत्नी को छोड़कर गौर चले जाते हैं, उस समय दोनों सोते हुए थे. इसके बाद, वह कर्तव्य भावना से प्रेरित होती है और अपनी सासु की सँभाल रखती है. सास- बहु दोनों हरिनाम के सहारे अपना जीवन काटती हैं. माता शची नित्यानन्द के साथ गौर को मिलने के लिए जाती है. गौर ने नित्यानन्द को गृहस्थ बन जाने की सलाह दी और वे वृन्दावन की यात्रा के लिए चले गये. बादमें, शची गंगा में समा जाती हैं. उनकी मृत्यु के बाद गौर प्रभु- मूर्ति में विलीन हो जाते हैं. बादमें, विष्णुप्रिया ने अपने घर में मन्दिर बनवाया जिसमें गौर की मूर्ति की स्थापना की गई. विष्णुप्रिया प्रभु की भक्ति में ही अपना शेष जीवन व्यतीत करती है. अंतमें, वह भी गौर की मूर्ति में समा जाती है.

इस खण्ड काव्य में विष्णुप्रिया के जीवन के वैयक्तिक, कौटुम्बिक और सामाजिक- तीनों पक्षों का उद्घाटन किया गया है. " विष्णुप्रिया " के द्वारा कवि ने नारीत्व का उत्कर्ष, प्रेम का माहात्म्य और पत्नीत्व का आदर्श प्रस्तुत किया है.

§39§ <u>रत्नावली</u> § सन 1960§

इस काव्य की रचना गोस्वामी तुलसीदास की पत्नी रत्नावली को लेकर हुई है. इसमें रत्नावली के बाल्यकाल, विवाह तथा विरहावस्था का वर्णन हुआ है.

{40} उच्छवास { सन 1960 }

" उच्छवास " कवि के शोक-विह्वल हृदय की अभिव्यक्ति है. गुप्तजी ने लिखा है कि " यह मेरे बहुकालिक उच्छवासों का संग्रह है. अपनों के स्मारक के रुप में इसका संकलन स्वाभाविक हो सकता है. " [1] यह उनकी आत्मनिष्ठ रचना है.

---

1. उच्छवास - निवेदन- पृ. 1.